IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वित्तीय समावेशन : उदेश्य, महत्व एवं चुनौतियॉं

अनिल बालाजीराव चिलपिंपरे

पी.डीएफ शोध छात्र, आय.सी.एस.एस.आर.

दिल्ली के आर्थिक सहाय्यता द्वारा

प्रस्तावना :

वित्तीय समावेशन संस्थागत प्रतिभागियों द्वारा पारदर्शी तरीके से कमजोर समूहों के लिए आवश्यक वित्तीय उत्पादों और सेवाओं तक एक सस्ती कीमत पर पहुॅच सुनिश्चित करने की प्रकिया है।

वित्तीय समावेशन का मतलब समाज के पिछडे एवं कम आयवाले लोगों को वित्तीय सेवाऍं प्रदान करना है। इसके साथ ही ये सेवाऍं उन लोगों को वहन करने योग्य मूल्य पर मिलनी चाहिए। इस सेवाओं में कुछ प्रमुख वित्तीय सेवाऍं है– ऋण, भुगतान, बीमा और वित्तीय सेवाऍं। इसे वित्तीय समावेशन या समावेशी वित्तपोषण भी कहा जाता है।

भारत में आम लोग बहुत लंबे समय तक संस्थागत बैकिंग व्यवस्था से जुडे नही थे। इसके कारण वे साहूकार जैसे स्थानिय महाजन से शोषित होते थे तथा ऋण जाल में पूरी जिंदगी गुजार देते थे अथवा पूरी सम्पत्ति खो बैठते थे। आजादी के बाद बनी स्वदेशी सरकार ने भारत के सभी लोगों तक बैंकिग व्यवस्था पहुॅचाने के लिए विभिन्न प्रयास किये। इस विविध प्रयासों को वित्तीय समावेशन की दिशा में किया गया प्रयास माना जा सकता है।

आज संसार के अधिकांश विकसनशील देशों के केंद्रिय बैंकों के मुख्य लक्ष्यों में वित्तीय समावेशन भी सामील हो गया है। वित्तीय समावेशन एवं गरीबी के लिए सिधा संबंध पाया

जाता है। संयुक्त राष्ट्र वित्तीय समावेशन के लक्षों द्वारा सभी परीवारों के लिए बचत या जमा सेवाओं, भुगतान और स्थलातंरण सेवाओं, क्रेडिट और बीमायहित वित्तीय सेवाओं की पूरी श्रृंखला के लिए उचित लागत पर पहुॅचे।

प्रस्तुत शोधपत्र में वित्तीय समावेशन के उदेश्य, वित्तीय समावेशन का महत्व एवं वित्तीय समावेशन की चुनौतियॉ का अध्ययन किया है।

शोधपत्र के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोधपत्र के उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. वित्तीय समावेशन का अर्थ समझाना।
2. वित्तीय समावेशन के उद्देश्य का अध्ययन करना।
3. वित्तीय समावेशन के महत्व को जानना।
4. वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया में आनेवाली बाधाएॅ एवं चुनौतियों का अध्ययन करना।

शोधपत्र अनुसंधान पध्दति :

प्रस्तुत शोधपत्र अनुसंधान पध्दति में कार्य करते समय अनुसंधान छात्र के द्वारा अपने अनुसंधान के दौरान प्राथमिक एवं द्वितीय अनुसंधान पध्दति का उपयोग करते हुए अनुसंधान कार्य किया है।

शोधपत्र अनुसंधान का महत्व :

प्रस्तुत शोधपत्र अनुसंधान का महत्व निम्नलिखित किया जाता है।

1. प्रस्तुत शोधपत्र के अध्ययन से वित्तीय समावेशन का अर्थ एवं वित्तीय समावेशन की परिभाषा ज्ञात होगी।
2. प्रस्तुत अनुसंधान से वित्तीय समावेशन के उद्देश्य समझा आयेंगे।
3. प्रस्तुत अनुसंधान से वित्तीय समावेशन का महत्त्व क्या है इसकी जानकारी होगी।
4. इस अध्ययन से वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया में आनेवाली बाधाएॅ कौन–कौन–सी है इसकी जानकारी होगी।

विषय प्रतिपादन :

प्रस्तुत शोधपत्र के अनुसंधान कार्य में वित्तीय समावेशन के उद्देश्य, वित्तीय समावेशन का महत्व एवं वित्तीय समावेश की चुनौतियॉ का अध्ययन निम्नलिखित है।

1) वित्तीय समावेशन के उद्देश्य :

वित्तीय समावेशन के उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. लोगों को संस्थागत बैंकिग व्यवस्था से जोड़ना जिससे जमा करने की प्रवृत्ती को जन्म दिया जा सके।
2. लोगों को संस्थागत ऋण की प्राप्ती सुनिश्चित कराना जिससे साहूकारों पर निर्भरता को कम कर ऋणी को शोषण से बचाया जा सके।
3. किसी भी प्रकार के लाभ, परिदान एवं बीमा जैसी सामाजिक सुरक्षा लाभार्थी तक प्रत्यक्ष रूप से पहुॅचाया जा सके।
4. वित्तीय समावेशन का मुख्य उद्देश्य उन प्रतिबंधों को दूर करना है जो वित्तीय क्षेत्र में भाग लेने से लोगों को बाहर रखते है और किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वित्तीय सेवाओं को उपलब्ध करना है।

2) वित्तीय समावेशन का महत्व :

1. वित्तीय समावेशन न केवल व्यक्तियों और परिवारों की मदत करता है बल्कि सामूहिक रूप से यह पूरे समुदायों को विकसित करता है और आर्थिक विकास को चलाने में मदत कर सकता है। वित्तीय समावेशन लोगों और समुदायों को सक्षम और सशक्त बनाता है।
2. वित्तीय समावेशन से समाज के सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में समक्षम बनाती है और समाज में असमानता को कम करती है।
3. सही वित्तीय निर्णय लेने के लिए कौशल और ज्ञान के साथ लोगों को सशक्त बनाती है।

4. वित्तीय समावेशन के अंतर्गत अधिक खाता खुलते है जिस कारण से अधिक पैसा जमा होता है और उन पैसे से ऋण दिया जा सकता है जिससे व्यक्ति और बॅकों को लाभ प्राप्त होता है।

5. वित्तीय प्रणाली में छूटे हुए वैसे लोग जो बैंकिग प्रणाली से जुड़े हुए नही थे, उनको जोड़ना जिनके लिए बैंकिग प्रणाली सिर्फ एक प्रवेश मात्र है। वह पूॅजी बाजार, मुद्रा बाजार जैसे स्थानों पर पैसा लगाते है। जिससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

6. गरीबी दूर करने में वित्तीय समावेशन बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है। जब आय के समान वितरण और सामाजिक न्याय की बात होती है और जब गरीबी हटाने के सवाल पर चर्चा होती है तब अनिवार्य रूप से वित्तीय समावेशन जरूरी है।

7. वित्तीय समावेशन के कारण स्वयं सहाय्यता बचत समूह को सहाय्यता मिली है।

3) वित्तीय समावेशन की प्रमुख चुनौतियॉ :

वित्तीय समावेशन की बाधाएॅ एवं चुनौतियॉ निम्नलिखित है।

1. वित्तीय समावेशन में वित्तीय साक्षरता एक प्रमुख चुनौति है। वित्तीय सेवाओं को प्राप्त करने के लिए वित्तीय साक्षरता की आवश्यकता पड़ती है लेकिन भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में इसमें बहुत सी कमियॉ है।

2. वित्तीय समावेशन की अन्य बाधा में भौतिक और डिजीटल कनेक्टिविटी की है। आयसीटी आधारित मॉडल की सफलता के लिए प्रौद्योगिकी से संबंधित मुदों का समाधान बहुत जरूरी है। इस अभियान को देश के लगभग 50,000 गॉवों तक पहुॅचाना है जो केवल टेक्नोलाजीकल कनेक्शन के जरीए संभव है। इनमें भी उत्तर–पूर्वी क्षेत्र, हिमालय प्रदेश, उत्तराखंड एवं जम्मू कश्मीर जैसे दुर्गम क्षेत्र में बाधाएॅ आती है।

3. सबसीडी योजनाओं के नगद अंतरणों में होनेवाली बढोत्तरी से निपटना।

4. बैंकिग की पहुॅच निम्नतम वर्ग तक ले जाने की दृष्टि से निगरानी व्यवस्था को सुदृढ एवं सुस्पष्ट बनाने की आवश्यकता है। इसलिए एक मजबूत निगरानी प्रणाली का होना काफी महत्वपूर्ण चुनौति रहेगी।

5. वित्तीय समावेशन में सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएँ भी एक अवरोध है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोधकार्य के अंत में यह कहा जाता है कि, वित्तीय समावेशन के कारण देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

वित्तीय समावेशन के उद्देश्य में कह सकते है कि, जिन लोगों तब बैंकिग सेवाएँ उपलब्ध नहीं है वही तक बैंकिग सेवाएँ प्रदान करना।

वित्तीय समावेशन से व्यक्ति तथा सरकार एवं बैंकिग क्षेत्र को लाभ मिला है।

वित्तीय समावेशन के कार्य में बहुत सी बॉधाएँ है इस बाधाओं को सरकार, बैंकिग क्षेत्र की सहाय्यता से सफल बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

1. karmakar K.G. Banerjee G.D. and Mohapatra N.P. (2011), Towards financial Indusicn in India, sage publication India pvt. Ltd. New Delhi.
2. Chakrabarty K.C. (2011), Finanxial Inxlusion: A road India needs to travel RBI, 21 Sept.2011.
3. www.financialservixes.gov.in
4. www.bankbazar.win